International Journal in Management and Social Science
Volume 12 Issue 05,May 2024 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

वेबर की दृष्टि में हिन्दू सामाजिक व्यवस्था

डॉ. संजय कुमार
सहायक आचार्य
समाजशास्त्र
राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू (राज.)

सारांश –

मैक्स वेबर एक प्रमुख समाजशास्त्री थे। उनका स्वयं के विचारों के बारे में मानना था कि वह कोई नया सिद्धान नहीं दे रहे हैं। समाजशास्त्र, जो कि ज्ञान की मुख्य धारा है, का विकास दीर्घ–काल से होता चला आ रहा है। ज्ञात रहे जर्मनीवासी वेबर ने समाजशास्त्र को बहुत समृद्ध किया है और भारतीय समाज व हिन्दू जाति व्यवस्था पर भी लिखा है।

मुख्य शब्द –

जर्मन, भारतीय, धर्म, समाज, प्रस्थिति।

विषय–विस्तार –

वेबर की कृतियों में भारतीय समाज का उल्लेख कई स्थानों में मिलता है। जहां तक भारत में समाज और धर्म का प्रश्न है, वेबर ने अपनी तीसरी जिल्द में इसका उल्लेख किया है। उनकी पुस्तक 'द रिलिजन ऑफ इण्डिया' का अनुवादित संस्करण ग्लेन्को फ्री प्रेस से 1958 में निकला था। इसमें वे हिन्दू धर्म के अतिरिक्त बौद्ध धर्म को भी सम्मिलित करते हैं। उनका यह अध्ययन चीन के अध्ययन की तरह ही है। इस पुस्तक में वे सबसे पहले भारतीय समाज की सामाजिक संरचना पर लिखते हैं। इसके तुरन्त बाद वे हिन्दू धर्म के शास्त्र सम्मत सिद्धान्तों का उल्लेख करते हैं। इसके आगे वे बौद्ध धर्म की चर्चा करते हैं। पुस्तक के अन्त में वेबर धार्मिक विश्वास के प्रभाव को भारतीय समाज के धर्म निरपेक्ष आचारों पर देखते हैं।

भारतीय समाज पर किसी भी टिप्पणी को करने से पहले, हर विदेशी विचारक की तरह वेबर भी यह मानकर चलते हैं कि यहां की सामाजिक व्यवस्था का आधार मूल में है। इन विद्वानों में से कुछ का विचार रहा है कि भारत में जाति व्यवस्था आदिम (च्तपउपजपअम) व्यवस्था है। वास्तव में यह सच्चाई नहीं है। वेबर ने जाति व्यवस्था के जिस स्वरूप को देखा वह कई प्रक्रियाओं में से निकल कर आयी थी। सबसे पहले कबिले थे। कबिले आदिम जाति बने। सामाजिक सरंचना का स्वरूप आगे बढ़ा, वर्ण आये और इससे आगे जातियां आयी।

वेबर के भारतीय समाज से सम्बद्ध विचार कई अन्य पुस्तकों में भी मिलते हैं। वेबर भारतीय सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था और इन सबके प्रभाव को धर्म निरपेक्ष क्षेत्रों में जानना चाहते थे। भारत से जुड़े हुए विचार रिलिजन ऑफ इण्डिया : द सोशियोलोजी ऑफ हिन्दूइज्म एण्ड बुद्धिज्म (त्मसपहपवद व्ि प्दकपंरू जीम ैवबपवसवहल व्ि भ्पदकनपेउ ंदक ठनककीपेउ), ऐसेज इन सोशियोलोजी (म्ेंल पद ैवबपवसवहल), इकोनोमी एण्ड सोसाइटी (म्बवदवउल ंदक ैवबपमजल) तथा जनरल इकोनोमिक हिस्ट्री (ळमदमतंस म्बवदवउपब भ्पेजवतल) में भी व्यक्त किये हैं। उन्होंने भारतीय संस्थाओं और व्यवहारों का विवरण अपने तर्कों के प्रमाण में दिया। इन सब कृतियों में वेबर ने जहां कहीं भारतीय सामाजिक व्यवस्था का उल्लेख किया है उसमें उन्होंने एक

बहुत बड़ी विषय सामग्री पर अपने विचार रखे हैं। इस विषय सामग्री में कृषक संरचना, ग्रामीण समुदाय, जाति, साहित्यकार और बौद्धिक, व्यावसायिक समूह, विधि व्यवस्था प्रकार तथा उसके आचार व्यवस्था के साथ सम्बन्ध और इन सबसे आगे हिन्दू और बौद्धधर्म के आचार आदि सम्मिलित हैं। यदि इन विषयों की दृष्टि से देखें तो वेबर का धर्म का अध्ययन अनिवार्य रूप से समाजशास्त्रीय अध्ययन बन जाता है। भारत में बौद्धिकों ने वेवर की कृतियों पर अपना ध्यान आकर्षित किया है। ऐसा करने में प्रायः हमारे यहां वेबर के हिन्दू और बौद्ध धर्म पर बहस और चिन्तन हुआ है। यह देखने का प्रयास भी हुआ है कि वेबर ने धार्मिक आचारों के प्रभाव को आर्थिक विकास के सन्दर्भ में किस भांति रखा है।

सुरेन्द्र मुंशी (डंग ैमइमत वद प्दकपं रू ।द प्दजतवकनबजवतल ब्तपजपुनमए ब्वदजतपइनजपवदे जव प्दकपंद ैवबपवसवहलए 1958) का तो कहना है कि भारत में वेबर की चर्चा कभी भी गम्भीरता से नहीं हुई है। जहां वेबर ने हिन्दू और बौद्ध धर्म का अध्ययन प्रस्तुत किया है। वहां भी भारतीय विद्वानों ने कोई सजगता नहीं बतायी है इसके विपरीत, यह आवश्यक है कि विदेशी लेखकों ने, वेबर ने, भारत पर जो कुछ लिखा है उस पर बहस की है। इस अभाव के होते हुए भी भारतीय समाजशास्त्री एक दम मौन रहे हों, ऐसा नहीं है। ई. 1960 के प्रारम्भ में एक सेमीनार का आयोजन हुआ, जिसमें भारतीय आर्थिक विकास में सांस्कृतिक मूल्यों की भूमिका पर बहस हुई। इस सेमीनार में एम. एन. श्री निवास, डी. जी. कर्वे और मिल्टन सिंगर आदि भी सम्मिलित हुए। कुछ इसी तरह का एक और सेमीनार ई. 1966 में हैदराबाद में हुई। इन दो सेमीनारों के अतिरिक्त छठें ओर सातवें दशक में वेबर के निष्कर्षों पर फुटकर निबन्धों द्वारा बहस चलायी गयी। सेमीनारों, गोष्ठियों और निबन्धों में इस थीसिस पर चर्चा हुई कि वेबर ने हिन्दू और बौद्ध धर्म पर जो कुछ लिखा उसकी भारत के लिये क्या प्रासंगिकता है। इस प्रासंगिकता पर योगेन्द्र सिंह ने (च्मतेचमबजपअमे वद ब्वपजंसपेउए ैहम 1989) अपने एक फुटकर लेख में वेबर की थीसिस पर कुछ बुनियादी प्रश्न रखे हैं।

वेबर द्वारा भारतीय समाज और धर्म पर उठाये गये प्रश्न –

प्रश्नों का कोई भी उल्लेख करने से पहले यह कहना उचित होगा कि वेबर के अध्ययन का उद्देश्य दुनिया के बड़े धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। वे यह जानना चाहते थे कि प्रोटेस्टेण्ट आचार संहिता में जिस तरह के आचार धर्म में थे, कहां तक वे हिन्दू धर्म में भी पाये जाते हैं?

वेबर के लिए विवेकीकरण, अधिकारीतन्त्र ऐसे मुद्दे थे जिनकी उपस्थिति को वे हिन्दू सामाजिक व्यवस्था और धर्म में खोजना चाहते थे। सब मिलाकर उनका उद्देश्य यूरोसेन्ट्रक (म्नतव.ब्मदजतपब) था।

वेबर ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था और धर्म का जो अध्ययन रखा उससे जुड़े हुए जो मुख्य प्रश्न थे, जिनकी पड़ताल वे करना चाहते थे, कुछ इस तरह है :

1. भारतीय समाज में ऐसे कौन से विशिष्ट विश्वास हैं जो शीघ्रता से बदलते हुए भारतीय समाज के साथ सामंजस्य रखते हैं और यदि ऐसे विश्वासों की शिनाख्त हो जाय तो उन पर जोर कैसे दिया जा सकता है?
2. ऐसे कौन से विशेष विश्वास हैं जिनकी आर्थिक विकास के साथ विसंगित है?
3. क्या हिन्दू धर्म और उसकी पारलौकिक तपश्चर्या के आचार आधुनिक तार्किक आर्थिक विकास के मार्ग में बाधक हैं?
4. क्या जाति, परम्परागत संयुक्त परिवार और धार्मिक सम्प्रदाय, भारत में वैज्ञानिक अभिवृत्तियों में आड़े आते हैं?
5. क्या आधुनिक प्रकार के आर्थिक औद्योगीकरण की गतिविधियां हिन्दू धर्म के परम्परागत धार्मिक आचारों के कारण गतिशील नहीं हो पायी हैं?

ई. 1958 में वेबर की कृतियों का अंग्रेजी में अनुवाद होने के बाद भारतीय समाज के अध्ययनकर्त्ताओं ने पिछले दो दशकों से इस विषय पर बहुत कुछ कहा है, लिखा है। वास्तव में, वेबर ने जिस मूल्य व्यवस्थाओं को उठाया है उनमें विवेकीकरण मुख्य है। उन्होंने धार्मिक आचारों के सम्बन्धों को आर्थिक विकास या पूंजीवाद के संदर्श में देखा है। वेबर ने जो प्रश्न उठाया है वह मुख्यतया सांस्कृतिक, आर्थिक विकास और आधुनिकीकरण से जुड़ा हुआ है।

निष्कर्ष –

वेबर भारतीय सामाजिक व्यवस्था का मूल आधार जाति मानते हैं। जिस भांति चीन के समाज में नातेदारी समूह और अधिकारीतन्त्र सामाजिक संरचना के केन्द्रीय आधार थे वैसे ही वेबर भारतीय सामाजिक संरचना का आधार जाति व्यवस्था मानते हैं। वेबर का कहना है कि भारत में धार्मिक विश्वास और सामाजिक स्तरीकरण प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। अन्य शब्दों में सामाजिक गैर बराबरी को वेबर धार्मिक विश्वासों के साथ जोड़ते हैं। वेबर स्पष्ट रूप से जाति व्यवस्था को एक प्रस्थिति समूह (जंजने ळतवनच) मानते हैं।

सन्दर्भ सूची –

1. वेबर – दि रिलिजन ऑफ इंडिया
2. वेबर – एसेज इन सोशियोलोजी
3. वेबर – इकोनोमी एण्ड सोसाइटी
4. वेबर – जनरल इकोनोमिक हिस्ट्री
5. शर्मा, रामशरण – शूद्रो का प्राचीन इतिहास
6. रामकुमार अहिरवार – बौद्ध धर्म का इतिहास
7. सुरेन्द्र मुंशी – मैक्स वेबर ऑन इंडिया